प्रस्तावना

हिंदी आज पूरे विश्व म अपने महत्त्व को रेखांकित कर रही है. यह भी इतना ही सच है कि विश्व म हिंदी को स्थापित करने म भारतवंशियों का अपना विशेष योगदान रहा है. भाषा केवल संपूण संप्रेषण का माध्यम मात्र नहीं होती न केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन वह किसी जाति की अस्मिता और उसकी संस्कृति की वाहक होती है मानव का सारा अनुभव उसके विचार उसका ज्ञान भाषा के माध्यम से ही सुरक्षित होता है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है. भारतदु हरिश्चंद्र ने निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल इस बात का शिकार करते हए स्व भाषा की शक्ति और सामथ्य को रेखांकित किया था भारतीय मानस म संस्कृत भाषा उसके महाकाव्य और उन्ह सुरक्षित पूरा कथाओं तथा स्मृतियों का सवाधिक योगदान रहा है. भारत एक बहभाषी देश है लेकिन लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाएं एक सांस्कृतिक सूत्र म बंधी हई है भारत के 11 राज्य तो हिंदी भाषी ह फिर भी समग्र देश म सामान्य तौर पर हिंदी को समझा जा रहा है 10 वीं शताब्दी और ग्यारहवीं शताब्दी म जितने भी भारतीय संत महंतों ने हिंदी के माध्यम से पूरे भारत म एक नई लहर पैदा की थी हिंदी और हिंदी भाषी क्षेत्र म सभी संतों का विशेष योगदान रहा यह सारे नेता हिंदी क्षेत्र से आते ह और उन्होंने हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए अपना विशेष काय किया गांधी जी ने हिंद स्वराज म स्पष्ट कहा- "सारे हिंदुस्तान के लिए जो भाषा चाहिए वह तो हिंदी ही होनी चाहिए." यह महत्वपूण व्याख्यान काशी हिंदू विश्वविद्यालय म गांधी जी ने हिंदी म ही किया था.

आज हम देखते ह कि हिंदी केवल भारत की नहीं, विश्व की भाषा बन चुकी है मॉरीशस, सुरीनाम, फिजी, रेन इन गुयाना, टोबैको आदि देशों म हिंदी जानने और बोलने वालों की संख्या अधिक है. हिंदी भारतीय मूल के लोगों के साथ आज पूरी दुनिया मं पहंच चुकी है. आज हिंदी विश्व भाषा के उत्तराधिकारी नी बनकर खड़ी है हिंदी मात्र एक भाषा भी नहीं जीवन पद्धति का भी नाम है.

जब हम विश्व स्तर की बात करते ह तो सबसे पहले गिरमिटिया का नाम आता है. हिंदी के प्रचार प्रसार म इन गिरमिटियाओं का सवाधिक योगदान रहा है . गिरमिट शब्द अंग्रेजी के अग्रिमेट शब्द का अपभ्रंश बताया जाता है. कोरे कागज पर अंगूठा का निशान लगवा कर हर साल हजारों मजदूर दक्षिण अफ्रीका या अन्य देशों म भेजे जाते थे उसे मजदूर या मालिक गिरमिट कहते थे और इस दस्तावेज के आधार पर मजदूर गिरमिटिया कहलाते थे हर साल 10 से 15000 मजदूर फिजी ब्रिटिश गुयाना दक्षिण अफ्रीका से शादी देशों म लेकर जाने लगे थे गिरमिटिया प्रथा अंग्रेजों द्वारा सन 1984 मं आरंभ हई और सन 1917 म से निश्चित घोषित किया गया था. अभिमन्यु अनत के शब्दों मं कहे तो मॉरिशस की हिंदी अपनी माटी की सोंधी खुशबू की गंद को आत्मसात कर के ही अपना एक निजी स्थान बना सकी है और हिंदी के शब्द सरोवर म अपने हिंदी के चंद बूंदे जोड़ पाई है." गिरमिटिया उन्ह हिंदी प्रचार प्रसार के हेतु अपने हिंदी को नहीं चुना लेकिन अपने देश से जुड़े रहने के लिए अपनी संस्कृति से जुड़े रहने के लिए इन्होंने अपने हिंदी भाषा के साथ ही व्यवहार आगे बढ़ाएं इन्होंने अपनी परंपराएं अपने रिवाजों को नहीं छोड़ा अपनी संस्कृति त्योहार परंपराओं को निभाते रहे गन्ने के खेतों मं काम करते हए भी रामचरितमानस की चौपाइयों का गान करते रहे दुख की घड़ी म हनुमान चालीसा पढ़ते रहे जिस प्रकार इन लोगों ने हर वक्त अपनी मातृभूमि से जुड़े रहने का प्रयास किया और इस प्रयास को साथक बनाने के पीछे हिंदी का विशेष महत्व माना जा सकता है हजारों किलोमीटर दूर इन मूल भारतवशी होने अपने आप को टूटने से बचाने के लिए एक दूसरे के साथ सुख दुख म साथी बन कर रहने लगे जिससे अपनी संस्कृति को बचा सके अपनी भाषा को बचा

सके गिरमिटिया मजदूरों ने अपने साथ होने वाले अन्याय दुख दद और अत्याचार को सहते हए भी अपनी संस्कृति को नहीं त्यागा और यही नई पीढ़ी को मिला आज हम देखते ह कि मॉरीशस म भारत से भी अधिक संस्कृति का वाहन किया जा रहा है मूल रूप से वहां से जुड़ने पर गिरमिटिया मजदूरों ने एक अपनी पहचान बनाई मूलतः बिहार और उत्तर प्रदेश से गए यह मजदूर अपने साथ रामायण हनुमान चालीसा सुंदरकांड आल्हा को प्रतियां साथ ले गए थे प्रवासन को व्यवस्था थी और व्यवस्था कभी सुख नहीं देती

गिरमिटिया देश के रचनाकारों ने मानस और तुलसी को बार-बार याद किया

" रामायण क्या है उसका उत्तर देना कठिन है
रामायण मं क्या नहीं है यह बताना और कठिन काम है
जहां रामायण है वहा तो स्वयं प्रभु राम जी है
और जहां राम है वहां तो सारा विश्व विराजमान ह
यह बताती है रामायण यह बताती है रामायण
कवि सुरजन पर ओही सरना म कविता सुरीनाम संपादक पुष्पिता राधाकृष्ण प्रकाशन 2003 पृष्ठ नंबर 215

इन प्रवासियों के लिए रामचरित मानस एक पोथी भर नहीं था रामचरितमानस के सभी प्रसंग वनवास,सीता का हरण, राक्षकों और रावणों के अत्याचारों को मात्र कहानी नहीं थी. जैसे रामायण से उनका रामायण से उनका साधारणीकरण अत्यंत सहज रूप से हो गया था यह सभी गिरमिटिया मजदूर मानव अपनी अयोध्या को पीछे छोड़कर आए थे. सभी को इन जंगलों म अपनी पणकुटी बनानी पड़ी निरंतर राक्षसों से सामना करना पड़ा गन्ने के खेतों म तो साक्षात रावण जैसे अंग्रेज थे. दूसरी तरफ अपने घर म स्त्री यानी सीता भी सुरक्षित नहीं थी खेतों के मालिक के रूप मं दरिंदे आए दिन सीता को हरण करके ले कर जाते थे. इस प्रकार गिरमिटिया मजदूरों का रामायण के साथ तादात्म्य सहज था. फिजी म प्रचलित टीवी प्रचलित "प्रवासी आल्हा" को पंक्तियां देखिए-

राम बनइह तो बन जइह बिगड़ी बात बनत- बनत बन जाहिं
चौदह बरिस रहे बनवासी लौटे पुनि अयोध्या मांहि ..
ऐसे दिन हमारी फिर जइह बंधुवन के दिन जइह बीत,
पुनः मिलन हमरौ होइ जइह, जइह रात भयंकर बीत..

मॉरीशस को प्रसिद्ध कथाकार अभिमन्यु अनत के उपन्यास "लाल पसीना" म गिरमिटिया मजदूरों को पेड़ा को देखा जा सकता है-

"सुनी के नाम हम मारीच के दीपवा हो
पहंचे अरी हम पाने को सोनवा
बदले म मिलेला भाई बांसों को मार हो
छिल- छिल गयली सब मजदूरन को पिठवा
कोल्ह के बैल बने इखबन पीसन को
छोड़ा था देस अपन कुली बन न को"

मॉरीशस एक ऐसा देश है जो भारत के सबसे निकट है और जहां भारतीयों का आना जाना लगातार रहता है सन-1901 म गांधीजी के आगमन से भारतीय मजदूरों म नई ताजगी आई भारतीय मजदूरों को शिक्षा और राजनीति क्षेत्र म सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित किया सन उन्नीस सौ सात म मणिलाल डॉक्टर मनीष पहंचे उन्होंने शिक्षा के लिए प्रयास किया और रात के समय होने वाली शिक्षा का बैठ का नाम दिया गया. भारतीय मजदूरों के बच्चों को हिंदी का ज्ञान दिया गया रामायण और आल्हा का ज्ञान होता था और भारत से

मॉरीशस म हिंदी का स्थिति पर विचार करते समय उन भारतीयों का याद समय उन भारतियों का याद अनायास ताजा हो जाती है. मॉरीशस म हिंदी का उद्भव और विकास का इतिहास डेढ़ सौ साल ही पुराना है. यदि सही अर्थों म देखा जाए तो हिंदी का विकास दो गिरमिटिया देशों म सवाधिक हआ फिजी और मॉरीशस का इतिहास को जानकर देखगे तो पाएंगे कि डॉक्टर मणिलाल द्वारा सन 1914 ईस्वी म प्रकाशित 'हिंदुस्तान' समाचार पत्र ही था. जिसने मॉरीशस के हिंदी साहित्य रूपी वृक्ष के लिए बीज का काम किया इसके बाद मॉरीशस इंडियन टाइम्स सनातन धमाक जनता जमाना म प्रारंभ हआ. फिर कुछ समय के बाद वतमान अनुराग दपण प्रभात स्वदेश इत्यादि. अल्पजीवी पत्रिकाओं ने प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार म विशेष रूप से योगदान किया. आज देश मं हिंदी का ११ पत्र – पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है.

मॉरीशस के कथा साहित्य का अध्ययन का ख्याल लगभग २०१० प्रवासी साहित्य के अभ्यास बाद हआ था. फिर मने २०१३ म यू.जी.सी. मेजर रिसच प्रोजेक्ट के लिए आवेदन किया और थोडा जानने के लिए आथिक सहयोग प्राप्त हआ. इसलिए म विश्व अनुदान आयोग का हादिक आभार व्यक्त करती हँ. मॉरिशस के इस अध्ययन के लिए म दो बार मॉरीशस जाकर आई. मने वहां का संस्कृति और लेखकों से मुलाक़ात के बाद मॉरीशस को और उसके साहित्य को निकटता से जाना. भारत और मॉरीशस के सम्बन्ध को जान पाई जब अप्रवासी घात गई तो गिरमिटिया मजदूरों का व्यथा और उसके जीवन का ददनाक पुकार मुझे द्रवित कर गई. विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी प्रचारिणी सभा, लाल माटी का स्कूलों म बच्चों से मुलाकात, राज हिरामन, रामदेव धुरंधर, धनराज शम्भू, रामदेव टहल, यन्तुदेव बुद्धू, हाई कमीशन जगदीश्वर, राम बरन, सत्यदेव टगर, शिक्षा मंत्री लीलादेवी दुखन जी आदि सभी लेखकों से मिलना से मुलाकात हई. ११ वां विश्व हिंदी सम्मलेन म मने हिस्सा लिया उस सम्मलेन म मेरी दो पुस्तकों का विमोचन हआ प्रवासी कथा साहित्य भाग -१ और भाग -२ सभी ने तारीफ़ को और बधाई भी दी. मुझे अपना लेख प्रस्तुत करने का अवसर भी मिला था. विश्व हिंदी सम्मलेन का भी मुझे मेरे इस अध्ययन म जोड़ने का तीव्र इच्छा थी इसलिए थोडा विलम्ब हआ. अभी तक मुझे दूसरा इन्स्टालमट भी नहीं मिला इसलिए उसको प्रतीक्षा कर रही थी. थोडा परेशानी का कारण रहा.

अंत म सभी हितैषुओं के प्रति हदय से आभार प्रकट करना चाहंगी. मेरे पति ने मुझे हेमंत कुमार ने पारिवार को संभाल ने को जिम्मेदारी लेकर मुझे मॉरीशस जाने को अनुमति दी म दिल से आभार व्यक्त करती हँ. राज हिरामन सर ने एक ईमेल से मुझे किताब उपलब्ध करवाई और उनके घर रुकने का अवसर भी दिया शायद ऐसा कोई नहीं कर पाता सर का सादर धन्यवाद ज्ञापित करती हँ. मेरे इस शोध से आशा है सभी शोधार्थीओं को लाभ मिलेगा. बहत और संभावनाएं थी और लिखने को लेकिन उतना नहीं जोड़ पाई इसका अफ़सोस भी रहेगा.

अस्तु.

Principal Investigator

Dr.kalpana Gavli